सं० भो०वि०/एफ.डी./50-84/27708. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० पी० के० इण्डस्ट्रीज, प्लाट नं० 110, डी० एल० एफ० एरिया फरिदाबाद, केश्रमिक श्रीमित सुनिता तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें उसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वाछंनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, श्रीदोगिक विवाद श्रिविनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीविसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, श्रीविसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7-2-58 द्वारा उक्त श्रीविनियम की धारा 7 के श्रीविन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णम के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों सथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :-

क्या श्रीमति .सुनी । की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो.वि./एफ.डी./117-84/27715.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० जिन्दल गैंस ग्रपलाईन्स सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री बजरंग गर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसक बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

म्रीर बुंकि हरियाणा के राज्यशाल विकाद की न्यावनिर्गय हेतू निर्दिश्ट करना वांछतीय सनमते हैं ;

इसलिए, झब, श्रीद्योगिक विवाद श्रीविनियम 1947 की बारा 10 की उन्धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई अमित्रयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीविसूचना स. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनोंक 20 जून, 1968 की साथ पढ़ते हुए श्रीवसूचना सं. 11495-जी.-श्रम-57/11245, दिनोंक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीव-नियम की बारा 7 के श्रीवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, की विवादशस्त या उससे सुनंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-- निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक क बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगन श्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री बगरंग भार्ता की से गम्मी का समायन न्यायोचित तथा ठी ह है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हक्दार है ?

सं भो.वि./एफ.डा./91-84/27722.—चूंकि हरियाणा के राज्यवाल की राये हैं कि मैं अनंगपुर स्टोन ऋशिय व.म.नी कटन ग्रनंगपुर पहाड़ी करीदाबाद के श्रमिक श्री राधे लाल तथा उसके प्रवत्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेसू निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रीदोगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपश्चारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा भदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधित्वना, सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीधित्वना सं. 11495—जो.श्रम-57/11245, दिनांक 7 करवरा, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला श्याय- निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री राद्ये लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का े हकदार है ?

सं म्रो.दि./एफ.डी./186-84/27729.--ब्रेंकि हरियाणा के राज्यशल की राये है कि मैं केरीसन्स (इडिया) प्रा० लि०, 1145, डी.एफ.एल. इण्डस्ट्रीयल इस्टेंट, फरीदाबाद के अभिक्ष श्री प्रशोक शर्मा तथा उत्तके प्रवस्त्रकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्य राल त्रिताद को स्थायनिर्णय हेतू निर्दिश्य करना बांछतीय समझते हैं ;

इसिनए, प्रव, भोर्थीिंग्क विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शवितयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भ्रधिसूचना सं. 5415-3-%म-68/ 15284, विनोध 20 बून; 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रविध्वनता सै॰ 11495-जी-अम/57/11245; दिनांक} 7 फरवरी, 1958, द्वारा उत्तर प्रविधितय की वारा 7 के प्रधीन गठित अम[े]प्यायालय, फरीवाबाद को विश्वादयस्त या उससे सुसंगत या उससे संम्बन्धित नीचे निश्चा मानला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री अशोक शर्मा की सेवाघों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, स्रो वह किस राहत का हुकदार है ?

सं. ग्रो. वि./एफ.डी./98-84/27736--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० एण्डियन हाईवेयर इण्डस्ट्रीज लि०, 66ए, एन. ग्राई. टी. फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री ग्रशोक कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हादा प्रदान की गई विविद्यों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम-67/11246, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायाखय, फरीदाबाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय के लिए मिटिक करते हैं जो कि कक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित भामला है:---

क्या श्री ग्रशोक कुमार की सैवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 2 अगस्त, 1984

सं भो.वि./प्फ.ही. 2/83-84/27863.—चूंफि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं भाटिया प्रिटिंग प्रेंस एफ/22 एन भाई ० टी ०, फरीदाबाद के श्रमिक श्री लाल चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई जीकोणिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भव, भोद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कित्यों का भवीग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं० 5415-3-अम/68/15254, विनांक 20 जून, 1988 के साथ पढ़ते हुए मिधिसूचना सं० 11495-जी.-अम-57/11245, विनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त मिधिनियम की खारा 7 के मिधीन गठित अस न्यायालय, फरीचाबाद, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्वायिनगंब के लिए निविंग्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत मथना सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री लाल जन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार हैं?

सं श्री वि/एफ. ही. 11/80-84/27870 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग्रे है कि मैं भाटिया प्रिटिंग प्रेस एफ 22, एन ग्राई ंटी फरीदाबाद, के श्रीमक मुन्नी लाल तथा उसके प्रबन्धकों के ुर्निष्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, श्रव, श्रीधोगिक विदाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्व मिक्तियों का प्रयोग करत हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नै चे हि खा म महा व्यायमिक विवादशस्त या उससे संबंधित नी चे हि खा म महा व्यायमिक विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित माम 1

क्या श्री मुन्नी लाल की सेवाधों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?